चतुर्थ अध्याय
भगवतीचरण वर्मा का काव्य ; सौन्दर्य मूलक अनुशीलन

- मानव सौन्दर्य
- प्राकृतिक सौन्दर्य
- प्राणि सौन्दर्य
चतुर्थ अध्याय
भगवतीचरण वर्मा का काव्य: सौन्दर्यमूलक अनुशीलन

जैसा कि हम अन्यत्र वह चुके हैं समान्तः मानव मन को आकर्षित करने वाली सुन्दर एवं सुगठित वस्तु के सामान्य धर्म को सौन्दर्य की संज्ञा दी जाती है। साधारणतया जिस वस्तु को देखकर मानव मन में कोई सुखद अनुभूति होती है, उसको वह सुन्दर कहता है, जैसे प्रातः कालीन उषा की लालिमा, नीले आकाश की उज्ज्वलता और रंग-बिरंगी इन्द्रधनुषी छटा को देखकर मानव प्रसन्नता से खिल उठता है और उसके मन में एक सुखद अनुभूति होती है। यही अनुभूति सौन्दर्य के नाम से जानी जाती है।

सौन्दर्य केवल मानव मनः तक ही सीमित नहीं रहता अपितु समस्त चराचर जगत में व्याप्त रहता है। यह प्रकृति का भी खास उच्च्वास है। इसलिए सौन्दर्य वह तत्त्व है, जिसके द्वारा न केवल जड-चेतन ही प्रभावित होते हैं, अपितु समस्त पशु-पक्षी भी उससे अभिमृत होते हैं। अत: कहना न होगा कि जो वस्तु हमें रुचिकर जान पड़ती है, वह हमारे लिए आकर्षक बन जाती है और उसी आकर्षण को सौन्दर्य की संज्ञा से अभिविन्य किया जाता है। वास्तव में मनुष्य सहार से ही सौन्दर्य प्रेमी रहा है और सौन्दर्य मानव-मन को अनादिकाल से लुभाता रहा है।

प्रकृति और मानव जगत के जितेरे कवि साहित्यकार सदा से ही सौन्दर्य के पारशी और सृष्टा रहे हैं। वे सौन्दर्य के नाना रूपों के प्रति आकर्षक और उसके जितेरे हैं। भगवतीचरण वर्मा भी कोई अपवाद नहीं हैं। उन्होंने अपने काव्य सृष्टि में मानव, प्रकृति और प्राणी-जगत के अनेक रूपों के चित्र चंदकेर हैं। यहाँ हम उनकी इसी सौन्दर्य सृष्टि पर विचार करेंगे।
मानव सौंदर्यः

मानव तथा प्रकृति का अदृश्य सम्बन्ध है। विश्व के समस्त लोकिक उपादानों में मानव एक महत्वपूर्ण इकाई है। ईश्वर ने मानव की रचना में अद्वितीय कलाकारी सिद्ध की है। इसलिए मानव का रूप रंग, आकार एवं वैश्विक सौंदर्य का एक ऐसा रूप है जिसे देखकर मानव–मन कमल की भाँति खिल उठता है। यही कारण है कि विश्वास की निर्मित सृष्टि में मानव उसकी सर्वोत्तम रचना है। जब वह वात्स्यायन से होता है तो उसे माँ का स्नेह मिलता है। कुछ व्यक्ति का होने पर पिता के अनुशासन भरे वात्स्यायन से उसका परिचय होता है। इस प्रकार उल्लिखित व ह समाज के विभिन्न अंगों के समक्ष में आता है और विभिन्न रूपों के प्रति उसका आकर्षण बढ़ता जाता है। मानव सौंदर्य के साथ ही वह प्रकृति सौंदर्य के भी समक्ष में आता है, परंतु यह इससे सर्वथा मुक्त नहीं रह पाता। प्रकृति सौंदर्य में भी वह मानवीय सुषमा एवं क्रिया–व्यापारों का ही दर्शन करता है।

कलाकार भी मानव–सौंदर्य से सबसे अधिक प्रभावित होता है। प्रकृति सौंदर्य के अनुसार कलाकार पंत ने सुमन, पुष्प आदि प्रकृति के उपकरणों को सुन्दर मानते हुए भी मानव को ही सुन्दरतम होने की प्रतिश्रुति प्रदान की है। छायावादी कवियों ने मानवीय सौंदर्य के अन्तर्गत नारी और पुरुष के बाह्य एवं आत्मात्मिक दोनों ही प्रकार के सौंदर्य का विचार किया है। यह सत्य है कि कविया का मानव से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है– इसलिए इन कवियों ने भी अपने कविता में नारी और पुरुष सौंदर्य के बाह्य एवं आत्मात्मिक दोनों पक्षों के सौंदर्य के ही दर्शन किए हैं। मानव का बाह्य रूप विचारण प्राचीन काल से है। जो कवियों का प्रिय विषय रहा है और आगे चलकर छायावादी कवियों का भी प्रिय विषय बना।

मानव की बाह्य रूपाकृति तो केवल नेत्रों को ही आकृष्ट करती है, किन्तु उसके गुण तो सदैव के लिए हृदय को अपने आकर्षण पारा में बौंध लेते हैं। साथ ही अपने भावों को व्यक्त कर सौंदर्य के रूप को उजागर करते हैं। भगवतीचरण वर्मा जो अपने कविता में मानव सौंदर्य के समक्ष विवेचन के लिए नारी और पुरुष को
बाह्य और आंतरिक दोनों रूपों पर पृथक—पृथक रूप से प्रकाश छाते हैं। यहाँ हमें भगवतीचरण वर्मा के नारी और पुरुष के बाह्याभास्तर सौन्दर्य का सादोहरण चित्रण अभीष्ट है।

वर्मा जी के काव्य-जगत में नारी और पुरुष के बाह्य सौन्दर्य की झलक दिखाई देती है। नारी प्रकृति की साकार पुष्पमा है। उसकी काल्याण रचना में ईश्वर ने अपनी सामस्त कलाकृतियाँ अर्पित कर दी है। इसी कारण नारी सौन्दर्य की असीम खान है जिसके सौन्दर्य को व्यक्त करने में कवि के सम्म सारे उपयुक्त फैक्टर्स पड़ते हैं। कोमल हस्ता का स्वभाव होने के कारण कवि को मलता की प्रतिमा नारी के सौन्दर्य के प्रति स्वाभाविक रूप से आकर्षणित होता है। कवि परम्परा में इसी कारण नारी विषय रूपों में विचित्रित हुई। कवियों की मान्यता रहती है कि “रूपसी नारी प्रकृति का चित्र है सबसे मनोहर।”

जैसा कि कहा जा चुका है छायावादी युग में मानवीय सौन्दर्य के अन्तर्गत नारी सौन्दर्य की प्रमुखता रही है और इसी के प्रति भगवतीचरण वर्मा का उत्साह भी दिखाई पड़ता है। इस युग के कवियों के नारी-विषयक दृष्टिकोण के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि “छायावादी कवियों ने रूपी और पुरुष के प्रेम की ओर कल्पना की है वह शैतियालीन आवाज़ काम-क्रीड़ा की वस्तु ओर इधर भोगवादियों और प्रनोगवादियों की जीवन स्तर पर उत्तर कर रूपी को व्याख्या आरंभिक वास्तव पूर्ण का साधन समझने वाली असामाजिक कल्पनाओं से प्रभुत्व है, साथ ही भक्त और अध्यात्मवादी कवियों की तरह छायावादी कवियों ने नारी को न केवल सहज अपावन माना और न प्रनोगवादियों की तरह कान्तिपृथ्व में बाधक समझ कर उसे संदेह की दृष्टि से ही देखा।”

नारी सौन्दर्य के वर्णन में नख-शिख परम्परा बहुत उपयोगी है। नारी का बाह्य-सौन्दर्य का चित्रण छायावादी सौन्दर्य भावना का इतना महत्वपूर्ण पक्ष नहीं है।

---
1. निनकर उवागी—पृ. 47
2. शिवदास सिंह चौधरी—हिंदी साहित्य के अस्तित्व वर्मा—पृ. 100-101
जितना महत्वपूर्ण है नारी के आत्मसंदर्भ का चित्रण। छायावाद युग में नारी के आदर्श रूप अथवा शील का चित्रण किया गया है। नारी के प्रति शील के मुख्य आधार, दया, करुणा, ममता, सेवा, सहानुभूति, समर्पण, र्याग, आदि दिव्य गुण हैं। कवि नायिका के अंगों के माध्यम से नायिका के भोलेपन और अभाव प्रेम की बात करता हुआ कहता है —

"कवि लिखने बैठा नव-बाला

जिसकी आँखों में भोलापन,

जिसके उमरे वक्षस्थल में

अभाव प्रेम का नव-रचनन्"

राजकुमारी द्रोपदी का स्वर्णक कर है। देश-देशान्तर के राजा-महाराज और राजकुमार स्वर्णक की शोभा बढ़ा रहे हैं। दुपद-सुता हाथ में वर्माला लिए मंच पर आसीन है। लगता है, पांचाली स्वर्ण पांचाल देश की साक्षात मान-मर्यादा की साक्षात प्रतिमा है, द्रोपदी पांचाल की शोभा ही नहीं, वह पांचाल राजवंश की श्री, शक्ति, और मर्यादा की साक्षात मूर्ति की शोभायमान हो रही है। ऐसी राजदुर्गिता का स्वर्ण से केवल ऐसा नरसुंगव ही वरण कर सकता है जो पौरुष की गौरवपूर्ण, साधना में अनुरक्त हो —

"सामने मंच पर दुपदराज की कन्या,

पांचाल देश की मान-रूप सुकुमारी!

आसीन द्रोपदी कर में है जयमानः

उसको वर सकता गौरव का अधिकारी!

3 मंगलाचरण वर्मा—मानव—३० ३७
वह राजवंश की श्री—शोभा सर्वादि।

साकार—शक्ति, अनुभवित नारी की।

वह स्वयं कर बैठी मंडप में,

साधना—रूप पौरुष के ब्रतदारी की।

उक्त पंक्तियों में कवियर भगवतीचरण वर्मा के द्वारा दिये गए सती, साध्वी रत्नी के आन्तरिक सीन्द्रत मान, शील, सोकुमार, श्री शोभा और नर्यादा का जीवन चित्रण किया है।

नारी का बाह्य—सीन्द्रत का चित्रण छायावादी सीन्द्रत भावना का उत्तम महत्वपूर्ण पक्ष नहीं है जितना महत्वपूर्ण है नारी के आन्तरिक सीन्द्रत का चित्रण। छायावादी गुण में नारी के आदर्श रूप अथवा शील का चित्रण किया गया है। नारी के प्रति शील के मुख्य आधार—दया, करुणा, नमता, सेवा, सहानुभूति, समर्पण, त्याग आदि दिव्य गुण हैं। प्रिया का आगमन जीवन में नूतन ज्योति जलाकर आशा और उल्लास का संधार कर देता है। कवि कहता है कि —

"उस दिन जब मेरी दुनिया में
तुम घिर आई थीं प्रथम बार—
नयनों में जीवन—ज्योति लिए,
अधरों पर रिसल का नव—सिंगार,
अलसित स्पन्दन में भरा पुलक,
श्वासों में मादक सुरम्य—भार!"

भगवतीचरण वर्मा—त्रिपुरार्ग—पृ० ७७
उस दिन जब ज्योति ना हैं प्रेम की थी,
जब प्राणों में था जगा प्यार!"  

बच्चन आदि भावुक कवियों के समान भगवतीचरण वर्मा का कवि भी प्रेमसे की रूप-छवि पर विश्वास हो साध्य पूछता है —

"तुम बिछातो चल रही हो
कौन—सा छवि—जाल रंगीन?
चपल गति से लिपट सोरब
कर रहा है विस्फोट नतन;
नूपुरों के स्वरों में
संगीत करता चरण—चुम्बन;
अरुण परगतल की प्रभा की
रसिम्यों के तार शत—शत
बुध रहे हैं भावना से
युक्त शाश्वत, मुग्ध योवन! 
कल्पना के सूक्ष्म में हैं
बेंध रहे दिशा—काल रंगीनी! "

5 मानव—पृष्ठ 28
6 प्रेम संगीत—पृष्ठ 21
नाथिका की शोभा कवि के नृत-जीवन में रस की धारा बहाती है। कदाचित कवि का जीवन सूख गया होता यदि ऐसी रुपवती किसी रमणी ने उसके हृदय-देश में प्रवेश न किया होता। वह कहता है —

"अरुण कपोलों पर लहजा की
भीनी-सी मुस्कान लिए;
सुरमित स्वासों में यौवनके
अलसाए-से गान लिए;

बरस पड़ी हो मेरे मनमें
तुम सहसा सरसार बनीं;
तुममें लय होकर अभिलाषा
एक बार साकार बनीं!"\(^7\)

रूप की समोहन शक्ति के परिणाम स्वरूप मादक प्रभाव की भी झलक इनकी रचनाओं में उपलब्ध होती है —

"यह तनमयता की बेला है,
यह है संयोग की रात प्रिये!
× × ×
इन अलस अधकूली ऑर्कोंमें
कितना मादक उल्लास भरा!

\(^7\) प्रेम संगीत—पृ० १९
तुम सम्मोहि न, में विसुध स्वप्न,

यह है संयोगकी रात प्रिये।”

युवती नायिकाओं की रूप—शोभा का भाव पूर्ण एवं मनोरम अंकन प्रस्तुत करने के लिए कवि—गण उनके स्वस्थ कपोलों—मदिर नेएं, तथा अन्य मोहक अंगों के विन के चित्र उरहेत हैं। वर्मा जी ने भी यथार्थसर उनके कुछ अंगों की रूप शोभा का रेखांकन किया है—

“अरुण कपोलों में रस था, अधरों में अनुत बोल”

“अरुण कपोलों पर योगन की भीनी सी मुस्कान,“

प्रभाववादी भावना से भी कवि चालित है ‘द्राम’ शीर्षक कविता में युवती को देखकर न कि किसी वृद्ध अथवा असहाय नारी को देखकर, बेठने के आसन किस स्वर्ण खाती कर दिए जाते हैं, इसकी जलक कवि ने प्रस्तुत की है—

“रुक गई द्राम झटका खाकर,

दरवाज़े पर आँख घूमी;

मदमाती—इठलाती युवती

नयनों ने उसकी छवि चूमी

आई उछाह की एक लहर

8 प्रेमसंगीत—पृ 45
9 मथुकण—पृ 29
10 बही
हैसकर मन की नस्ती झूमी;  

थी एक अप्सरा या कि परी  

रह गये सभी दिल थाम-थाम।  

हम ठीक तरह चढ़ भी न सके,  

घर घर घर घर चल पड़ी ट्राम!  

कंघे से कंघे फिड़े हुए  

थी भरी खचामच ट्राम कहाँ  

ओ नहीं दिखाई देता था  

तिल रखने का भी ठीर जहाँ  

हैसती —सी बॉकी विदर घर  

बेदङ खाली हो गयी वहाँ,  

आदर से युवती बैठ गई  

कुछ बल खाकर, कुछ झूम—झाम!"  

कवि ने नारी सौंदर्य के चित्रण में न केवल इसके रूप लाख्य और कोमलांडों का चित्रण किया है, अपितु उससे नारी—हृदय के उन कठोरतम भांति और रूपों को भी देखा है, जो एक नारी में विपरीत के समय उद्दृष्ट होते हैं। नारी का हृदय जहाँ फूल और नवनीति से भी कोमल देखा जाता है, वहाँ कर्म—भूमि में कच्चे से भी कठोरतम होने में उसे कोई संकोच नहीं होता। ऐसा ही मानवी सौंदर्य का चित्रण करते हुए वर्मा जी द्वारा की नारी के महादेव में कहते हैं —

11 अमृतलाल नागर—आज के लोक प्रिय हिन्दी कवि भगवतीचरण वर्मा—पृ 100-101
"मैं नारी हूँ, कोमल मेरा अंग पर"

प्राणों में है कुलिश समान कठोरता"12

जग में अपनापन मिलना महुर्ष ग्रह है। यह जानते हुए ब्रह्म सन उसको पीछे दौड़ता है, तभी तो अहं आहत होता है। 'पागल जग' अंधकार पूर्ण जीवन में यह कवि अपने जीवन के मधुकण अर्पित करने का आग्रह करता है —

"अंधकारमय पागल जग है,
अंधकारमय वही मरण
उसको जीवन में तुम भर दो,
अपने जीवन का मधुकण!
सत्य शिवं सुन्दर मधुकण"13

कवि ने नारी को सम्बोधनी रूप में ही नहीं देखा, बल्कि नारी के ज्वाला रूप को भी देखा है। नारी को शाक्त स्वरूप, गति रूप चंबलायमान और मोहक रूप में अपने काव्य में चित्रित किया है—

"तुम सम्बोधनी थी सपने में
tum jwala thi uss tapne me,
तुम स्थिरता थी, tum hi gati thi,
जग tum me tha, tum apne me!"14

12 निषेधम—पृ 83
13 मधुकण—पृ 2
14 सागर—पृ 29
छायावादी कवि केवल बाह्य रूप पर ही नहीं टिके हैं अपितु उन्होंने आन्तरिक
पक्ष को भी अपने काय में उँकेंसरा है। कवि कहता है कि सौन्दर्य केवल बाह्य आकर्षण
ही पैदा नहीं करता, बल्कि वह बासना के मोह से मुक्त कर हमें जीवन और जगत के
आन्तरिक सत्य से भी साक्षात्कार करता है। मानव तो इस संसार में आकर भूल ही
जाता है कि इस संसार में जहाँ विकास होता है वहाँ अन्त भी होता है। इस संसार में
आना-जाना, आदि-अन्त यही एक क्रम है, जिसे कवि समझाना चाहता है—

"मैं भूल गया था अन्त वहीं है
जहाँ आदि का है विकास!
यह आदि-अन्त यह जन्म-मरण,
यह बनने का, मिटने का क्रम,
मैं पूछ रही—क्या यही ज्ञान?
क्या यही सत्य व्यापक महान"\(^{15}\)

कवि यहाँ न पर नायिका के माध्यम से नायक के जीवन में ऊर्जा और नये उमंग
का संचार करता है—

"मैं बर्मु प्यार का कम्पन,
तुम उसकी मधुर कहानी!
मेरे जीवन में आओ
मेरे जीवन की रानी!"\(^{16}\)

\(^{15}\) मानव—पृ० 29
\(^{16}\) मधुकरण—पृ० 71
कवि नायिका से कहता है कि तुमने मेरे सोये हुए हृदय में कम्पन और मेरे सूने से संसार में श्रवण सा स्पन्दन पैदा कर दिया है। अतः कवि उसे अपने जीवन में जीवन-व्योमिति बन कर अने का आह्वान करता है—

“मेरे सोये से उर में
कुछ जाग्रति की कम्पन सी,
अलसायी सी आँखों में,
मदिरा के पागलपन सी,
मेरे सूने से जग में,
तुम नैवेय के स्पन्दन सी,
आओ! जीवन-निधि आओ
जीवन में तुम्हारे जीवन सी।”

वर्मा जी के काव्य में पुरुष सौन्दर्य का मित्र पुरुष रचना का चित्रण उतने विस्तार से नहीं मिलता जितने विस्तार से नारी सौन्दर्य का चित्रण हुआ है। संभवतः इसका यह कारण हो कि काव्य रचना का क्षेत्र पुरुषों के अधिकार में रहा है और उन्हें नारी आकर्षण की तरह रही है। यह स्वाभाविक भी है छायावादी कवि कोमल हृदय से सम्पन्न कल्पना प्रिय रहे हैं। अतः उनके काव्य में भी पुरुष सौन्दर्य के उदाहरण दिखाते ही मिलते हैं। कवि पुरुष के सौन्दर्य को रचना तेजस्वी, आजानु बाहु, और बलशाली आदि उपमाओं से सुशोभित करता हुआ कहता है—

17 महुकाण—प्रो—73
"इतनी निराश क्यों, यह रवि सा तेजस्वी,
आजानु—बाहु, आरक्ष नेत्र बलशाली,
था देख रहा इस ओर विसुध खोया सा,
देखते तुम्हारे जिसने वृद्धि जुनका ली।"\textsuperscript{18}

कर्ण के प्रति कवि ने एक अजीब तरह की सहानुभूति के साथ उसके पीरूष को महत्ता दी है। कर्ण का व्यक्तित्व महान है। लेकिन इस व्यक्तित्व में जहां दूसरों का कल्याण करने की सातिकता है, वहाँ दूसरों को नष्ट करने की प्रख्यता भी है। इसलिए कवि कहता है—

"मैं कर्ण और मैं हूँ मनुष्य की संज्ञा
कुल—परस्मया के नहीं लिए मैं बनधू
मेरे भुज—दंडों में ही मेरी सेना,
मेरा पीरूष है महाराज्य का वाहन"\textsuperscript{19}

कवि एक तरफ तो पुरुष के कठोर व्यक्तित्व को उजागर करता है वहाँ पर उसकी नतरता दानशीलता को भी वह अनदेखा नहीं रहने देता—

"वह कठिन कुलिश सा, वह महान हिम—गिरि सा
वह है अजेय, वह श्रीराम, वह दानी
पर है उसमें समाज की एक समस्या
जिसके आगे नतमस्तक वह अभिमानी।"\textsuperscript{20}

\textsuperscript{18} भगवतीचरण वर्मा—शिरपथरा—पृ॰79
\textsuperscript{19} भगवतीचरण वर्मा—शिरपथरा—पृ॰80
\textsuperscript{20} भगवतीचरण वर्मा—शिरपथरा—पृ॰79
भगवतीचरण वर्मा ने अपने काव्य में मानव के अनेक सूत्रों का वर्णन किया है। कवि कहता है कि मैं ही सम्राट हूँ, वास्तविकता भी हूँ और भ्रम भी हूँ। पुरुष भी मानव है और प्रकृति भी। मानव ही शान्ति है और क्रांति भी है। साधना भी है और अशान्ति भी है—

"झूँस हूँ मैं, मैं हूँ सम्राट,

वास्तविकता हूँ मैं हूँ भान्ति,

पुरुष हूँ कहीं, प्रकृति हूँ कहीं,

शान्ति हूँ कहीं, कहीं हूँ क्रांति,

चेतना हूँ, मैं हूँ उन्नाद,

साधना हूँ मैं और अशान्ति।" 21

उनका कृत्तित युवक अपनी पितामाति को विराटता प्रदान करते यौगिकता महुआ प्रेयसी को उलझाना देता है—कि जिस रुप के बल पर वह उसके प्रणय को दुरी की दे रही है—वह अत्यन्त अस्थायी तत्त्व है, उसके समुख अत्यन्त तुच्छ है—

"रूप राशि से भरा हुआ है यह समस्त संसार;

रूप—राशि पर मत इतराना, रूप राशि है हार।" 22

मनुष्य जब कटु सत्य को सुनता है तो वह परेशान हो जाता है और अपने को बंधनों में जकड़ा हुआ महसूस करता है। साथ ही जब मर्यादाओं की जंगीर उसके सामने आती है तो वह अपने आपको कमजोर महसूस करता है। कवि कहता है कि முझे यह कटु सत्य परेशान करते हैं न कि कोई भूल—

21 महुकण—पृ० 13
22 महुकण—पृ० 11
मानव सौन्दर्य ईश्वर की विभूति है परिवेश और संगीत का फल है। वर्मा जी मूलतया एक सुकलि हैं। कवि ही नहीं वह कलाकार हैं, कलाकार ही नहीं, वह तो सौन्दर्य के उपासक और साधक हैं। वर्मा जी की काव्य कृतियों में मानव सौन्दर्य की मार्मिक आभास्यज्ञना के अभिविश्वास होते हैं। वर्मा जी ने जिस सौन्दर्य को अनतस में अनुभव किया है उसी को अपनी अभिविश्वास के माध्यम से समस्तिविभ का विषय बनाया है। वर्मा जी ने अपनी रचनाओं में मानव सौन्दर्य के अन्तर्गत नारी सौन्दर्य और मानव सौन्दर्य का चित्रण किया है। तथापि खूलता एवं मांसलता की गाथा के अभिविश्वास प्रायः नहीं होते हैं। निष्कर्षतः छायावादी कवियों की भौति भगवतीचरण वर्मा भी मानव सौन्दर्य के प्रति भी उतने ही आकर्षित थे जितने प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति। यह उनकी विश्वृत दृष्टि का परिचायक है।

प्राकृतिक सौन्दर्य :-

प्रकृति और मानव का अन्योन्याओक संबंध हैं। वे न केवल एक दूसरे के पूरक हैं; वरन् ये दोनों सृष्टि के वितान को पूर्णता प्रदान करने वाले महत्वपूर्ण उपादान हैं। काव्य सर्जन की दृष्टि से प्रकृति से ब्रह्मकर कोई दूसरे प्रेमक तत्त्व सम्बन्धवतः नहीं है। दूसरे शब्दों में काव्य-स्फुरण के लिए ‘प्रकृति’ ऐसा व्यापक और मोहक माध्यम है,

23 अमृतलाल नागर-भगवतीचरण वर्मा-पृ. 35
चतुर्थ अध्याय

जिसकी उपेक्षा कर, कोई भी कवि श्रेष्ठ और उदात्त काव्य सर्जन का दावा कर ही नहीं सकता। प्रकृति तो काव्य-रचना का यह अंत और अज्ञात छोटा है, जहां से कवि लोग पोषण प्राप्त करते हैं। प्रकृति के नयानिशिम चित्राकर्षक दृष्टा कौन है, जिसे आकृति नहीं कर लेते। यही कारण है कि हिंदी का एक भी ऐसा कवि नहीं होगा, जिसने अपनी कविता में प्रकृति को नजरअंदाज किया हो। आधुनिक हिंदी कविता में नवीन काव्य प्रगतियों के साथ आधुनिकता-बोध का जो प्रभाव दृष्टिगत होता है, उसमें प्रकृति का योगदान अविश्वसनीय है। प्रकृति के अंतः और वाह्य-दोनों का सूक्ष्म एवं गम्भीर निरीक्षण छायावादी काव्य की एक प्रमुख विशेषता है।

काव्य में संबद्धना के यथाप्रकार धरातल पर गहन मानवीय अनुभूतियों की मानक एवं हददमाली अभिव्यक्ति होती है। काव्यभाष्यकृति का सशक्त माध्यम होने के कारण प्रकृति कवियों को सदेव लुभाती रही है। काव्य में प्रकृति का स्वरूप विविधवर्णी और बहुआयामी है। कभी प्रकृति काव्य का विषय आलम्बन के रूप में बनती है तो कभी उसे उददीपन के रूप में चित्रित किया जाता है। कभी-कभी प्रकृति काव्य का विषय आलंकारिक मुद्रा के साथ चित्रित की जाती है, तो कभी-कभी उसे संबद्धनात्मक, रहस्यात्मक एवं प्रतीकात्मक रूप में भी अभिव्यक्ति होते देखा जा सकता है। कहा जा सकता है कि प्रकृति काव्य के लिए एक महत्वपूर्ण बहुमुखी उपादान है।

भगवतीचरण वर्मा ने अपने काव्य में प्रकृति के अनेक रूपों का नन्दनयोग पूर्वक चित्रण किया है। भगवतीचरण वर्मा ने प्रकृति के कोल से उसके सूक्ष्म और विशेष शांत और शुद्ध, प्रसन्न और रोहत, निर्माणकारी और संहारक सभी प्रकार के रूपों के प्रति आकर्षण का अनुभव किया है। इस तरह प्रकृति और छायावादी कवि वर्मा के बीच एक अन्तरात्मक या आध्यात्मिक सम्बन्ध की स्थापना हो गयी थी। इनका प्रकृति में विशेष आकर्षण था। वह कवि के लिए स्थूल सृष्टि मात्र न थी। उसमें उसे सूक्ष्म सत्या और सीन्द्र के भी दर्शन होते हैं। प्रकृति में वह ईश्वरीय सत्य का विभाषित देखता था। इसी कारण प्रकृति के साथ
उसने अपना सामान्य सम्बन्ध भी स्थापित किया। प्रकृति उसके लिए प्रिया, मैं, सहचरी आदि विभिन्न रूपों में सामने आती है। अब हमें यहाँ भगवतीचरण दर्शन के काय्य में प्रकृति के चित्रित विविध रूपों का निदर्शन अभीष्ट है।

वर्मा जी का यहाँ प्रातःकाल का चित्रांकन कितना स्वाभाविक एवं निरंजन है —

रवि हैंसा

नाचती हुई अवनि पर

नम से

उत्तरी प्रभात की प्रथम किरण,
कलरव के स्वर का मधुर-मधुर
संगीत भर गया अमर में

जीवन जागा!

तम भागा!

आशाएं अभिलाषाएं—आकांक्षाएं
सब सोते—सोते जाग उठीं!

मानव के उर में उपहल—पुराहल मच गई अचानक,

वह कोलाहल, वह हलचल जग में

बढ़ता जाता प्रतिपल—झलमल—झलमल
सरिता बहती भर—भरकर कोमल स्वर तहरी।

तुम

अभी सो रहे हो क्यों?

उठो तो आँखें खोलो,

बोलो—जग से कुछ बोलो,

आराम किया है सकल रात

अब समय हुआ है काम करो,

पहले दिन को सार्थक करके

फिर

शाम करो...

रोने को सारी रात पड़ी

तुम हैंसो,

क्योंकि

रवि हैंसा”

यहीं पर कवि ने आलंबन रूप में प्रकृति का चित्रण किया है। सूर्योदय के साथ जगत जागता दिखाई देता है। सारे संसार में कोलाहल भव जाता है। कवि कहता है—

'अब समय हुआ है, काम करो,

24 भगवतीचरण वर्मा—एक दिन—पृ 41-42
पर निराशा उसका पीछा नहीं छोड़ती। वह दिल को आश्वासन देता है--
'रोने को सारी रात पड़ी है'

कवि हँसने के लिए प्रेरित करता है, पर इसलिए नहीं कि चित्र में प्रस्तुत है,
बल्कि इसलिए कि कवि हँसा, तुम भी हँसो।

छायावादी कवियों की एक प्रमुख विशेषता रही है कि वे राष्ट्र--प्रेम और देश प्रेम
से प्रभावित होकर मात्रमूर्ति की वंदना करते हैं। केवलछायावादी ही नहीं, अपितु
आधुनिक कला के कमोदेश सभी बड़े कवियों ने भारतभूमि, मात्रमूर्ति की अराधना की
है। ऐसे कवियों में श्रीधर पाठक, हरिशोधर, मैथिलीसरण गुप्त, गोकुल चन्द्र शर्मा विशेष
उल्लेख किया जा सकता है। प्रसाद जी और निराला जैसे प्रमुख छायावादी कवि ने
इस परम्परा का निर्माण किया। भगवतीवर्ण वर्मा की इस कविता में मातृ--भूमि की
आराधना का भाव दृष्टिगत होता है, और साथ ही मात्रमूर्ति के सौंदर्य के लिए प्रकृति
के विभिन्न उपादानों से उपनयन चुनता है और स्फीत रूप में प्रस्तुत करता है--

"मातृ--भू मातृ--भूल बार प्रणाम,
हिंदुगिरि सा उन्नत तत मन्तक
तेरे चरण चूमता सागर
श्वासों में है वेद--अज्ञाते
वाणि में है गीता का स्वर।"25

वर्मा जी प्रकृति के अंगुभागी तो हैं हीं, साथ ही प्रकृति के विभिन्न उपादानों के
माध्यम से वह भारतीय जन--मानस को नैतिकता का संदेश देने के लिए भी प्रयोग
करने से नहीं चूकते हैं। प्रकृति के उपादान इस बात का संदेश देते हैं कि अपने

25 अमृतलाल नागर-भगवतीवर्ण वर्मा: मातृ--भू मातृ--भूल बार प्रणाम--पृ. 50
अस्तित्व को मिटाकर नयी वेतना का उद्देश्य होता है और नया विश्लेषण किया जाना संभव है। इकबाल का प्रसिद्ध शेर इस दृष्टि से दर्शन है —

"मिटा दे अपनी हत्ती को अगर कुछ मरत्वा चाहे
दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है।"

काल माध्यम के दृष्टिकोन में इसका उत्तेजक मिलता है जहां कोई भी वस्तु अपने विरोधी गुण वाले तत्त्व से संघर्ष कर समाप्त हो जाती है और नयी व्यवस्था को जन्म देती है —

"रंगों की सुंभाल रच, मदु रहतु जल जाती है,
सौभग विक्षारक फूल भूल बन जाता है.
धरती की प्यास बुझा जाता गलकर बादल
पाठाणों से टकराकर निर्भर गाता है।"26

वर्मा जी रंगों के कवि हैं। वे इस बात को अध्यात्मिक कविता में बेहिस्स व्यवस्था प्रदान करते हैं कि उन्हें फूलों के रंग जितना आकर्षित करते हैं उतना सर्व विकसित पुर्ण नहीं कर पाता । कवि एक अलग कल्पना लोक में विचारण कर रहा है।
जब मन किसी सपने में या कल्पनालोक में विचारण कर रहा हो तब कोई भी वस्तु उसे अनाकृष्ट प्रतीत होती है। अपने आस-पास के परिवेश प्रकृति के विविध रंग, जीवन की रंगीनियाँ, हरितज्व स्पाइन, ऊषा की लाली या जीवन के विविध आकर्षण उसे अनाकृष्ट करते हैं। वह तो न जाने किस कल्पनालोक में विचारण करते हुए जीवन के समस्त सुख की से विद्रोह होने में ही अपने को श्रेयज्ञ समझता है। भगवतीचरण वर्मा उसी कल्पना लोक में विचारण करते हुए संसार के आकर्षण से आसक्त होते हुए कहते हैं —

26 अमृतलाल नागर—भगवतीचरण वर्मा—स्वीकार करो—पृ 28
“मुझको रंगो से मोह, नहीं फूलों से
जब उषा सुनहली जीवन—श्री बिखराती
जब रात रुपहली गीत प्रणय के गाती
जब नील गगन में आन्दोलित तनमयता
जब हरित प्रकृति में नव—सुपमा मुस्काती
तब जग पड़ते हैं इन नयनों में सपने;
मुझको रंगो से मोह, नहीं फूलों से।”

कवि प्रकृति की भयावता के प्रति सचेत करता हुआ अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है कि मनुष्य अपनी असीम आकृति के परिणाम स्वरूप प्रकृति को ऐसी स्थिति में पहुंचा रहा है जहाँ उसका स्वरूप प्रलंबकृती, कठोर और भयानक होता जा रहा है।

कवि उसी भयावता को चित्रित करते हुए कहता है —

“सहम रहा गगन प्रशान्त तप्त आह से भरा,
सहम रही अशान्त भाव रंगत रंजिता धरा,
उबल रहा समुद्र और
मेघ दूर गिर रहा
मनुष्य भाल पर लिए विनाश की परम्परा।”

XXX

27 अमृतलाल नागर—धर्मवतीचरण वर्मा—‘मुझको रंगो से मोह’—पृ 34
28 अमृतलाल नागर—धर्मवतीचरण वर्मा—‘मुझको शीश दान दो’—पृ 47
"जैसे नम से टककर लेती
हैं जल की लहरें उद्दंड,
जहाँ खेलता ही रहता है

निश-दिन झंगावाल प्रवचन,
अपनी आंहों के धुलेपन
से ढक देता है मात्रदंड,

लिए हुए गिरि खण्ड अंक में

लिए हुए उर पर हिम खण्ड!"²⁹

कविवर भगवतिचरण वर्मा प्रकृति के अनुपम विचरण हैं। उन्होंने जहाँ एक और प्रकृति के उपर रूप का चित्रण किया है, वहाँ वे प्रकृति के नयनानिराम रूपों के चित्रण में भी खूब रहे हैं। कवि ने प्रकृति के सान्य रूप का चित्रण करते हुए रवि और अमा के बीच बड़ी मनोहर वातावरण प्रस्तुत की है। रवि अमा (सान्यकालीन धुंधल) से पूछता है कि वह कौन है जो एकएक क्षितिज से उत्तर कर आ रही है, तो अमा रवि को उसके पराजय का भान कराती है रवि ‘पराजय’ से ग्रसित लोकलाज के कारण जल में डूब जाता है। कवि ने कैसे सुन्दर मानवीकृत रूप का चित्रण किया है —

जगमगाई तारिकाएँ!

रो रहा रवि क्षितिज पर मीन,

पूछता है वह अमा से—सजनी, तुम हो कौन?

²⁹ भगवतिचरण वर्मा—मधुकर—पृ 36
कितिज को छूता हुआ जल हिल पड़ा,
पवन अपने आप ही सिहरा वृद्धि
लिए सीरभ
गुनगुनाता
और गाता
फिर अमा ने कहा--
देखो, शमा है जल उठी!
शमा करना देव!
तुम मुझसे पराजित हो गए,
पर यहाँ लघु-लघु
दीप अगणित जल रहे हैं,
जगमगाई तारिकाएँ
इन्होंने मुझको पराजित कर दिया!
गुना रवि ने--
कुछ सहम कर, कुछ सकुचा कर,
लाज से वह हो गया अति लाल!
और जल में
छूता! "30

30 भगवतीचरण वर्मा—एक दिन—पृ. 35-36
यद्य प्रकृति के दिशित उपादानों से जीवनप्रयोगी वस्तुओं के संचय का संदेश देते हुए कहते हैं कि प्रकृति की आभा देखने में ही सुन्दर और शालीन नहीं होती, प्रत्युत वह जन-मानस के लिए उपयोगिता की वृद्धि से भी आकर्षक, लुभावनी और हंदक्ष्मी होती है। कवि कहता है ---

"मैंने सूरज से ताप लिया,
मैंने बादल से विद्वुत ती.
अपने स्वर में भर लिये यहाँ
पर मैंने कितने ही निर्जीर."31

यहाँ पर कवि ने प्रभात वर्णन अवान्तर हेतु के लिए किया है उस सुरमि प्रभात बेला में जो चहुँदिस मादकता विचर रही है। कवि का प्रिया के प्रति प्रणय-निवेदन प्रत्युत है जो छायावाद की प्रमुख प्रृवृत्ति है---

तुम नवल उषा की प्रथम पुलक की सहरस,
तुम स्वप्न विजुलित मुख किरण की सर्पन्धन,
तुम सौरभ से शल्क मलयज की मादकता
तुम आशा की उच्चवसित मधुर कल-कृजन"32

भगवतीचरण वर्मा ने प्रभात का वर्णन मादक रूप में किया है। मानव का स्वभाव है कि वह अपनी मनस्थिति के अनुसार ही बाह्य संसार को देखता है। भगवतीचरण वर्मा जी प्रकृति के ऐसे सुहावने वातावरण को जो ही नहीं जाने देना चाहते। इसीलिए तो वे अपनी प्रिया से कहते हैं ---

31 अमृतलाल नागर-भगवतीचरण वर्मा-‘विस्तर’ पृ 57
32 अमृतलाल नागर-भगवतीचरण वर्मा-पृ 77
“आज सीरम में भरा उच्छधार है,
आज कम्पित श्रमित यह वातास है,
आज शतदल पर मुदित-सा झूलता
कर रहा अठखेलियाँ हिमाल हैं,

लाज की सीमा प्रिये, तुम तोड़ दो!
आज मिल लो, मान करना छोड़ दो!
आज मधुकर कर रहा मधुपात है,
आज कलिका दे रही रसदान है,
आज बौरों पर विकल बोरी हुई,
कोकिला करती प्रकृति का गाय है,
यह हृदय की भेंट है, स्वीकार हो!
आज यीवन का सुमुख अभिसार हो”33

छायावादी कवि प्रकृति में सौंदर्य का आरोप करते हुए वह अपनी प्रिया के सौंदर्य को सर्वपरिस्थित मानता है। प्रकृति के समस्त उपादानों में प्रिया सौंदर्य का आरोप करते हुए छायावादी कवि का आग्रह है कि प्रकृति के समस्त रूपों की सुनदरता प्रिया–सौंदर्य की ऋणी है क्योंकि पूरी प्रकृति ने प्रिया के ही रूप–सौंदर्य से रूप का दान प्राप्त किया है। वर्मा जी की निम्नलिखित पंक्तियाँ इसका पुष्ट प्रमाण हैं। इन पंक्तियों में सूरदास के ‘भ्रमरगीत’ में विचित्र प्रकृति और सौंदर्य वर्णन का भी प्रभाव

33 अमृतलाल नागर–भगवतीचरण वर्मा–पृ० 70
परिलक्षित होता है। इसके साथ ही शेक्सपियर के सोनिट्स में भी इस तरह का वर्णन दृष्टिगत होता है —

"अम्बर की लाली को उस दिन, 
तुम्हे ही था अनुराग दिया; 
तुम्हे उषा को अपनी छवि, 
कलरब को अपना राग दिया; 
अपना प्रकाश रधि—किरणों को, 
अपना सौरभ मलयानिल को, 
पुलकित शतादल को तुम्हे ही 
प्रिय, अपना महुर पराग दिया!"34

वर्मा जी ने प्रकृति के व्यास से नारी—सौन्दर्य का अद्भुत चित्रण किया है, केवल वासना—निर्माता थित्र नहीं। साथ ही कवि ने प्रकृति में नवयोगकर्म का आरोप करते हुए प्रकृति की रूप सत्ता का मानविकरण किया है —

"अपने पराग से ही विह्वल 
कलियों ने खोले वक्सथल 
आकाश की पुलकन बनकर 
हे छलक रहा उनका परिमाल।"35

34 भगवतीचरण वर्मा—मानद—बादल—पृ 25
35 अमृतलाल नागर—भगवतीचरण वर्मा—पृ 72
यहाँ पर व्यक्ति की सत्ता एवं महत्ता को स्वीकार करते हुए कवि ने समाज में प्रत्येक व्यक्ति के किसी न किसी रूप में किये गये योगदान का उल्लेख किया है। जिस तरह विशाल आकाश गंगा में नाम और बेनाम मारे अपने शुद्ध प्रकाश से ही कुछ न कुछ आलोक फैलाते रहते हैं उसी तरह समाज में प्रसिद्ध अप्रसिद्ध या अपरिचित व्यक्ति का भी कुछ न कुछ योगदान होता है। अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता और प्रगतिवादी चेतना को अभिव्यक्ति देते हुए वर्मा जी का कथन है —

"ऊपर नम पर कुछ थोड़े—से

टिम-टिम करने वाले तारे"।

हैं बींट रहे अधिपत् जग को

कुछ प्रकाश वे बेचारे।

छायावादी काव्य घंटे में रहते हुये भी वर्मा जी ने अपनी प्रगतिवादी दृष्टि का परिचय दिया है और साथ ही उनके काव्य में खालिस्त मस्ती का भी एक आलम दिखाई देता है। वे प्रकृति के ऋषियों हैं जिसने उन्हें बेलीस जिन्दगी जीने का माध्यम दिया है। इसलिए अपनी कविता में उन्होंने स्वीकार किया है —

जब कलिका को नादकत में

हँस देने का वरदान मिला,

जब सरिता की उन बेहाद—सी,

लहरों को कल—कल गान मिला,

जब भूले—से, भरमाए—से,

36 भगवतीचरण वर्मा—मानव—पृ 51
ब्रमरों को रस का पान मिला,

tab hame maston ko hriday mila

mar-mitne ka arman mila!"37

prithi ke rup sansadhyar ko prakriti ke upamana ke pratiikalyan rup se
tulana karte hue kavi ka aashay hai ki wahanon jo svacchhata, tajjagri, sansadhyar, maanakta
sukhelapan vyapt thaa. wah malin hohi khar pruchhata hai ki tumne aapne svabhavik sansadhyar
ka parivarg kyo karahto thum thos se khaan chhoord aahee hohi —

mod se bhari sukhad ras-dhara,

prathma mru-otro ka hasa vilasa,

umargon ka svacchhanda bhadra,

aur kalika ka gandhochhvaas,

uska ka suresht sukh-shruangar

chaheen par thum aapne hohi chhoord!"38

Ish prakar hame nishkarsh rup me kah sakhte hain ki bhagvaticharan varma ke kavye me
prakriti ke nanawidh rupe se hmaara sakshatkara hota hain. chaayaavadhio ne prakriti ko
gnanvikrut rup me vitrit karya hai aur varma ji bhi iske koi apvad nahin hai. varma
ji ne prakriti-sanskadhyar ko anek pryojana ke range me range kar pustut karya hai. khaan
yeh prakriti manav ko nariikta ka pata padhata hai, to khaan yeh manav ko manvish
sambandh ko usha se aaplayil karti hai. itna hai nahin, khaan—khaan yeh prakriti

37 bhagvaticharan varma—maanav puro 113
38 bhagvaticharan varma—naburujan puro 21
नाभिष्ठता के संदेशों से सराबोर दीख पड़ती है। प्रकृति चित्रण के जो परंपरागत रूप -दर्शन है, वे तो मिलते ही हैं, प्रकृति के आलंबन रूप, उद्दीपन रूप, पृष्ठभूमि के रूप में चित्रण और अंदु वर्णन जो आलंबन का ही स्वरूप है, का चित्रण भी हमें लुभाता है।

साथ हर आधुनिक युग में प्रकृति चित्रण की जितनी भी प्रमुख प्रवृत्तियाँ प्रचलित हैं, वे सभी वर्ण जो के कार्य में, उपलब्ध तो होती है साथ ही भाषा की सुविदारता-भावों की मनोरमता कल्पना की कोमलता और चित्रात्मकता तथा अलंकारों की योजना ने प्रकृति वर्णन को सुन्दर, सरस और सजीव सा बना दिया है। इस दृष्टि से वर्ण जो का प्रकृति वर्णन अपने सम-सामाजिक कवियों के प्रकृति-चित्रों की समान कोटि का ही है। यहाँ तक कि भगवदीवर्ण वर्ण का मानना है कि प्रकृति का समस्त मानव से अनावदिकाल से चला आ रहा है और मानव प्रकृति के अनेक रहस्यों को अपनी बुद्धि द्वारा पुलकित आ रहा है। इसका ज्यादातर उदाहरण बैंग्नीक उन्नति है। मानव ने प्रकृति को बलपूर्वक अपने वश में कर लिया है और यही प्रकृति उसकी असाध्यात्मिक की कारण समय-समय पर उससे भयानक बदला भी लेती है। पुरुष प्रकृति को अपने ही विनाश का साधन बना लेता है। और इसका मुख्य कारण यह है कि जहाँ पुरुष प्रकृति को जीत रहा है वहाँ वह अपनी प्रसूता को नहीं जीत पाया।

❖ प्राणि सौन्दर्य :-

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, छायावदी रचनाकार प्रकृति सौन्दर्य और प्रेम का कवि है। ये तीनों उपादान छायावाद में ऐसे गुल मिल गये हैं कि इनमें पारंपरिक करना भी कभी-कभी टेंडी-खीर जान पड़ता है। छायावाद में प्रकृति का मानवीकरण और फिर उसका सौन्दर्यपरक चित्रण, साथ ही इन सबके माध्यम से प्राणी जगत को प्रेम का संदेश देना, यही छायावदी कवि का रचना-विधान है। प्राणि द्वारा प्रकृति पर अपने कार्य के रूप में अर्थ-अर्थक कहते हैं अनुमित भगवदीवर्ण वर्ण ने छायावदी रचना-विधान को नजदीकी से चीना और उसका श्लाघनीय ढंग से अनुमति किया है। सौन्दर्य चित्रण में वर्ण जो ने प्रकृति और मानव के सौन्दर्य के साथ-साथ मानवता को भी ओझाल नहीं होने दिया है। यह कवि की रूपमूलक प्रकटता का प्रतिफलन ही है कि उन्होंने कीट-पंग, कोइ, कोयल, भ्रमर आदि आदि के कार्यकाल पर संजीवरों के साथ अपनी कायानुभूति और कायाभियक्ति में स्थान
दिया है। यहाँ हमें इस मानवता प्राणीजगत के सौन्दर्य विचारण पर भी एक विहंगम दृष्टि से दृष्टि निकेश करना अमिश्च्य है।

प्रकृति तथा प्रकृति से कुड़े समस्त उपादानों का मनोरम अंकन छायावादी कविता की प्रमुख विशेषता कहीं जा सकती है। पशु-पक्षी प्रकृति की कोमलता एवं मधुरतम रचना हैं। वे विविध रूपों में प्रकृति को ही अभिव्यक्त करते हैं। छायावादी कवियों ने अपने काव्य में जहाँ मानव-सौन्दर्य को स्थान दिया, वहीं मानवेतर प्राणियों को भी अपने काव्य के दायरे में समेटा है। अपने भावों और विचारों को व्यक्त करने के लिए छायावादी कवियों ने मानवेतर प्राणियों को भी माध्यम बनाया है। छायावादी कवि ने प्रकृति-सौन्दर्य और मानव-सौन्दर्य के साथ-साथ मानवेतर प्राणि सौन्दर्य का भी मध्य एवं मन्नमुष्ठ छायाकंक मिलाया है। कवि की दृष्टि में सौन्दर्य केवल मानव जाति तक ही सीमित नहीं होता, अतिरुत समस्त चराचर जगत में व्यक्त रहता है। इसलिए सौन्दर्य वह तकनी कि जिसके द्वारा केवल जड़-चेतन ही नहीं प्रभावित होते, अतिरुत समस्त प्राणि जगत पशु-पक्षी भी सौन्दर्य से अभिमूलक होते हैं। भगवद्गीरण वर्मा ने अपने काव्य में कौट, पतंग, भ्रमर, कोयला आदि के माध्यम से मानव को सीख देने का भी प्रयत्न किया है। यह तो मानव पर सन्तोष करता है कि वह इनसे कितना सीख पाता है।

वर्मा जी यहाँ पर दृष्टिगत करना चाहते हैं कि जब प्रकृति के सभी प्राणी कल की चिन्ता छोड़कर आज में निमान एवं व्यस्त रहते हैं, तो ऐ मानव तू क्यों कल की चिन्ता करता है। वर्मा जी कहते हैं—

"कोयला बोली पुलक 'आज' में, मधुवन मधु से जूझ रहा,
कलिका हैंस दी पिकल 'आज' में मलय सुरमि को चूम रहा
कब कलिका को कलकी चिन्ता, कब कोयल को कल की याद?
हाय अभागे मानव तू ही, 'कल' के भ्रम में घृूं रहा।"39

39 भगवद्गीरण वर्मा—मानव-पृ० 146
बस्त्र अपने देशव के साथ समस्त बातावरण को पुलकित कर रहा है। बस्त्र की मादकता से वन-उपवन सभी सरसों हो रहे हैं। एक ओर भवरों की मन-भावन गुंजार है, तो वहीं कोकिल के कल-कूज्ज भी अपने पंचम स्वर में स्वर ध्वनि में आ रही है —

"कवि लिखने बैठा—मधुमरु है,

मधु से मलवाला है मधुवन;

शौरों की है गुंजार मधुर,

पिक के पंचम में है कम्पन!

मलयानिल के उन ज्ञानों में

सौंभ के सुभाष की सिहरन!

अवखुली कली की आँखों में

सुख—स्वनों की कोमल पुलकन! 40

कहना न होगा, यहाँ कवि भगवतीचरण वर्मा ने सुरम्य बातावरण के मादक चित्रण द्वारा प्रकृति के मादक रूप का जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया है जो देखते ही बनता है।

प्रकृति मानव की सबसे बड़ी सहचरी है। वह र्ग—च्छ पर न केवल हमें सीख देती है, बल्कि सचेत भी करती है। यह मनुष्य पर निर्भर है कि वह प्रकृति से कितना सीखता है। कवि भगवर के माध्यम से धर्ध्य और प्रतीक्षा की सीख देना चाहता है लेकिन उसकी मधुलोचनात्मक पुष्प की उपेक्षा कर देते हैं। फूल के प्रति वह उपेक्षात्मक दृष्टिकोण कवि को खलता है—

40 भगवतीचरण वर्मा—‘मानव’—४० ४०
नमुनकर क्या जाने प्रेम? प्रेम है तड़पन!

उन्माद—भरा है दो प्राणों का बन्धन;

कलिका का ते सर्दियों, नष्ठ कर उसको

उड़ जाने में ही है नमुनकर को पुलकन

रस में भिल जाना ही है रस का पीना;

जो भीत न सका वह नहीं जानता जीना! "41"

कवि यहाँ पर कौल और कौवे के माध्यम से अस्मानता को बुद्धिमत लिखते हुए कहता है कि दोनों के रूप तो एक है परम्परा गुण पूर्वक—पूर्वक हैं। इसलिए जो अच्छे गुण वाले होते हैं वह उसके प्रिय बन जाते हैं और जिसके गुणशील अच्छे नहीं होते, वे घृणा—ग्राही होते हैं। इसलिए कवि कहता है —

"कौल काली है—कौवा काला है। ,

कौल बोलती है—कौवा बोलता है,

दोनों ही पक्षी हैं

फिर भी हम कौल को प्यार करते हैं और कौवे से घृणा करते हैं!

यह विषमता क्यों दोनों ही तो एक ही बुद्धि कर्ता की करतूतें हैं।"42"

पतंजलि के बाद जब बसंत ऋतु का आगमन होता है तब प्रकृति अपने पूरे योजना पर होती है चारों तरफ वातावरण सुगंधित और मादकता युक्त हो जाता है। प्रकृति के रेशे—रेशे से सुरंग—कण झड़ते प्रतीत होते हैं ऐसा लगता है कि मनो पूरी

41 भगवदीचरण वर्मा—‘मानव—पृ॰ 103
42 अमृतलाल नागर—भगवदीचरण वर्मा—पृ॰ 70
प्रकृति प्रकृतिलिंग हो रही है। बोधाएं हुए आम खिलते हुए पुष्प कुसमित और सुरुवात वातावरण होने के लिए बायस कर देते हैं। पुष्प वातावरण उल्लासासम हो जाता है —

"आम को बीर पर बीराई हुई कोयल ने पंध्रम में गाया,
बुढ़े बुढ़े और सारा मणुषन उन्माद से झूम उठा।
मौलश्री, शेफाली अपने देशद्रोह को लेकर फूल उठी।
पल्लवों की हरीतिमा उल्लास बिखेर रही है।
आज बरसत संसार को गङ्घु-पत्त्र पिला रहा है।"

प्राणीजगत प्रकृति का एक अभिन्न अंग है वह प्रकृति से अनुप्राणित और अनुझाित होता है। प्रकृति के उपायाद्य मानवीय सृजन को भी संज्ञात करने में सक्षम होते हैं। किन्तु मानव अपनी आत्मन्यता के कारण प्रकृति की आदेशी करता है। प्रकृति के युग्म मानव को प्रेम, कर्मणा और नैतिकता की शिक्षा से भरे हैं किन्तु ननुष्य है कि उच्चर देखना नहीं चाहता। कवि निन्द पवित्रों में ननुष्य को वूढ़ ऐसा ही संदेश देता है —

"आज मदुक्कर कर रहं मदुपान है,
आज कलिका दे रही रसदान है,
आज बीरों पर विकल बीरों हुई
कोकिला कस्ती प्रणा का गान है।"
यह हृदय की भेंट है, स्वीकार हो।

आज योग्य का सुमुखि अभिसार हो।”

इस प्रकार हम निष्पक्ष रूप में कह सकते हैं कि भगवतीचरण वर्मा ने प्राणी सौंदर्य को अत्यन्त नवीनता के साथ अपने काव्यपत्र में साकारता प्रदान की है।

उनका प्राणी सौंदर्य अनूठा एवं अद्वितीय है उसमें नवीन कल्पना है, नवीन वेतना है,

तो कहीं नवीन सूक्ष्म सौंदर्य भी विद्यमान है। वह अपने आप में अनूठा सौंदर्य है।

---

44 अमृतलाल नागर—भगवतीचरण वर्मा—पृ 70